श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सा विद्या या विमुक्तये

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

(5)

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर Answer - 5

शहर Answer Sheet - 2021-22

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	સ્વાર્થ એવં સુખ
(२)	રૂપી
(३)	ક્રિયા
(४)	ગુલામ
(५)	સદાચારી
(६)	સચ્ચી શાંતિ
(७)	ખાંકેસિ
(८)	संसार
(९)	અશુભ રાવણ
(१०)	મહલ
(११)	અશુભ
(१२)	ધર્મ પ્રવેશ
(१३)	સમ્યક્ત્વ
(१४)	બલદેવ
(१५)	દુરાચારી
(१६)	क्रूर
(१७)	लाभांतराय
(१८)	नंदावर्त
(१९)	पंचेन्द्रिय
(२०)	बीज

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	કુંભી
(२)	પુષ્પ કી દો માલાએ
(३)	પુતલા
(४)	નારી
(५)	દુસ્વર
(६)	વિતશોકા
(७)	ચઉરેન્દ્રિય
(८)	વ્યસન
(९)	દુર્દરય
(१०)	શિકાર
(११)	શ્રેણિક રાજા
(१२)	આરંભિક
(१३)	શક્રસ્તવ
(१४)	કુબજ
(१५)	દેવ
(५)	પાતાલ મેં
(६)	મિથ્યાત્વ મોહિની
(७)	ઉન
(८)	વિનય
(९)	પ્રેમિકીય
(१०)	સ્થાન કો
(११)	નારક
(१२)	દુસ્વર
(१३)	સ્થિર
(१४)	ધર્મ કે ઉપદેશકો
(१५)	મચ્છર
(१६)	અભૂત
(१७)	ધારણા કરને વાલે કો
(१८)	ચારગતિ કા અંત કરનેવાલે
(१९)	ઉપઘાત
(२०)	ગમનાગમન

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	વર્તમાન કાલ મેં
(२)	જુઆ
(३)	બગાઈ
(४)	વિહાયોગતિ

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	7	(६)	5
(२)	3	(७)	1
(३)	9	(८)	10
(४)	2	(९)	4
(५)	8	(१०)	6

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	25
(२)	6 રાજ
(३)	23 હજાર સાડે સાત સૌ વર્ષ
(४)	82
(५)	42
(६)	17
(७)	9
(८)	3 સાલ
(९)	4
(१०)	7

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	12
(२)	✓	(२)	8
(३)	×	(३)	1
(४)	×	(४)	19
(५)	✓×	(५)	9
(६)	✓	(६)	24
(७)	×	(७)	17
(८)	✓	(८)	6
(९)	×	(९)	10
(१०)	✓	(१०)	4

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

→ १. दुर्गुणों की बदबू और सद्‌गुणों की सुवास मनुष्य को उच्चस्थान पर विराजित करती है जीवन में यदि सद्‌गुणों की सुवास हो पर साथ-२ दुर्गुण हो तो मानवी सच्ची लोकप्रियता नहीं पा सकता। यदि दिन मे मानवी धर्म का आचरण करे व शाम को कल्ब मे और जुआ आदि धर्म के विरुद्ध कार्य करे बड़ो का अपमान करे तो न तो वह लोक प्रिय बन सकता है और न ही सद धर्म का आचरण करने वाला बन सकता है। ऐसे व्यक्तियो के नाम से धर्म की निंदा होती है धर्मी लोग भी निंदनीय हो जाते है

→ २. जुआ एक ऐसा व्यसन है जिससे व्यक्ति तो बर्बाद हो ही जाता है साथ ही साथ पूरा का पूरा परिवार तथा खानदान ही बरबाद हो जाता है। जुआ का एक बड़ा उदाहरण हम महाभारत के कौरव पांडव के बीच जुआ खेला गया उसमे भी देख सकते है। जिसके कारण युद्ध हुआ था। जुआ चोरी की ओर से भी ले जाता है यहां तक की इसमे हत्या भी हो जाती है। अतः जुआ एक खराब व्यसन है ऐसा हम कह सकते है।

→ ३. निद्रा - नींद - सुख पूर्वक जाग सके वो निद्रा कहलाती है ② निद्रा निद्रा - दुःख पूर्वक जाग सके वो निद्रा निद्रा है ③ प्रचला - बैठे-२ या खड़े-खड़े नींद करे वह प्रचला कहलाती है ④ प्रचला प्रचला - चलते-२ जो नींद करे उसे प्रचला-२ कहते है ⑤ थिणद्धि या स्त्यानर्द्धि - दिन मे सोचे हुए कार्यो को निद्रावस्था मे रात्रि मे कर आवे सामान्य व्यक्ति मे वर्तमान में हो उससे सात आठ गुना ज्यादा नींद मे होता है ऐसी निद्रा थिणद्धि निद्रा कहे है।

→ ४. कौशांबीनगरी मे सिद्धार्थ नामक राजा थे वहा सम्यक्त्व पाकर दिक्षा ली बीस स्थानक तप की आराधना की और तीर्थंकर नामकर्म बांधा - फिर मिथिला नगरी में विजय राजा और विप्रा रानी के उदर में च्यवन हुआ चौदह स्वप्न सूचित च्यवन कल्याणक आसो सुद पूनम को हुआ और आषाढ वदी आठम को जन्म हुआ। दस हजार वर्ष आयुष्य भोगा। एक हजार राजाओ के साथ दिक्षा ली। एक हजार मुनिओ के साथ सम्मेतशिखर पर एक माह का अनशन कर चैत्रवदी दसमी के दिन मोक्ष सिधारे।

→ ५. सब कुछ जानने वालो को तथा सब कुछ देख सकने वालो को उपद्रवो से रहित, व्याधि और वेदना से रहित, अंतरहित, कदापि क्षय नही पाने वाले, जहा जाने के पश्चात संसार में वापस फिरना नही होता तथा सिद्ध हुए जीवो की जहा गति होती है तथा जिन्होने सात प्रकार के भय को जीता हो उन जिनो को जिनेश्वरो को नमस्कार हो। (१० वी गाथा) जो भूतकाल मे सिद्ध हुए है, जो भविष्य काल में सिद्ध होने वाले है और जो वर्तमान मे अरिहंतरूप विद्यमान है उन सभी को मन, वचन काया के द्वारा इन तीनो प्रकार से वंदन करता हुं।